ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 182-184**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

पोखरण परमाणु परीक्षण के पश्चात् भारतीय परमाणु–नीति

डॉ० विशाल कुमार श्रीवास्तव
असि० प्रोफेसर– रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग, डी०ए०वी० पी०जी० कॉलेज कानपुर (उ०प्र०), भारत

Received-15.03.2025, Revised-22.03.2025 Accepted-28.03.2025 **E-mail : vksdav1@gmail.com**

सारांशः ***भारत ने अपने परमाणुविक कार्यक्रम का प्रारम्भ परमाणु शक्ति के सृजनात्मक स्वरूप की उपादेयता के परिप्रेक्ष्य में, द्वितीय युद्ध के पश्चात् किया था। 10 मई, 1954 को भारतीय लोकसभा के समक्ष भारत के परमाणुविक कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुये भारतीय प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिये परमाणु शक्ति का प्रयोग भारत जैसे देश के लिये ज्यादा महत्वपूर्ण है, अपेक्षाकृत फ्रांस जैसे औद्योगिक दृष्टि से विकसित के लिये। भारतीय संस्कृति के विलक्षण एवं आदर्शवादिता के परिप्रेक्ष्य में पंडित नेहरू का यहाँ तक मानना था कि हम कभी भी परमाणु बम नहीं बनायेगें, भले ही हमारे अंदर इसकों बनाने की क्षमता हो। किसी भी परिस्थित में आणुविक उर्जा का प्रयोग विनाशकारी उद्देश्यों के लिये नहीं किया जायेगा और मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी भारत इसी नीति का अनुसरण करेगा, परन्तु अक्टूबर, 1964 में चीन द्वारा परमाणु परीक्षण के पश्चात् भारत के परमाणु नीति के पुनर्मूल्यांकन की माँग होने लगी। यह कहा गया कि भारत को शक्ति संतुलन के लिये अपरिहार्य रूप से परमाणु बम बना लेना चाहिये। फिर भी अभी भी भारतीय नेतृत्व परमाणु उर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोग की नीति का ही अनुसरण करता रहा। 5 मार्च, 1970 को भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने भी भारतीय राज्य सभा में कहा था कि श्भारत सरकार को पूर्ण विष्वास है कि भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमता के विकास की वर्तमान नीति और परमाणु उर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के कार्यक्रम का विस्तार राष्ट्र के महत्वपूर्ण हित में हैं।***

कुंजीभूत शब्द– सृजनात्मक स्वरूप, उपादेयता, भारतीय लोकसभा, परमाणुविक कार्यक्रम, परमाणु शक्ति ।

परमाणु शक्ति के शांतिपूर्ण प्रयोग के उद्देश्य के साथ भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण 18 मई, 1974 को राजस्थान के जैसेलमेर के पोखरन में किया था। इस सफल परीक्षण के साथ भारत परमाणु शक्ति विकसित करने वाला विश्व का छठा देश बन गया। भारत ने इस परीक्षण के समय यह स्पष्ट कर दिया था कि यह विस्फोट शांतिपूर्ण कार्यों के लिये है और भारत शांतिपूर्ण कार्यों के लिये ही परमाणु शक्ति का प्रयोग करना चाहता है। भारत की स्थिति स्पष्ट करते हुये भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने कहा था कि श्परमाणु तकनीकी में सक्षम देश और परमाणु शक्ति रखने वाले देश में अंतर है। हमारे पास कोई परमाणु बम नहीं है। हमारा उद्देश्य इस ज्ञान का अथवा इस शक्ति का शांतिपूर्ण उद्देश्यों के अतिरिक्त अन्य किसी कार्य में उपयोग का नहीं है। भारत द्वारा किये गये परमाणु परीक्षण पर विश्व के देशों में तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। अमेरिका का कहना था कि इस विस्फोट से विश्व में स्थायित्व को आघात पहुंचेगा।

मार्च, 1998 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में गठित सरकार ने अपनी नीतियों का राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुये विदेशनीति के सम्बन्ध में कहा था कि यह सरकार परमाणु–नीति की समीक्षा करेगी तथा अपना परमाणु विकल्प खुला रखेगी। वाजपेयी सरकार ने भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में भारतीय परमाणु नीति की समीक्षा करते हुये परमाणु परीक्षण का निर्णय लिया। 11 एवं 13 मई, 1998 को पोखरण में 5 परमाणु परीक्षण किये गये। इन परमाणु परीक्षणों के औचित्य का निर्धारण करते हुये भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था श्एक मात्र कसौटी जिसने हमारा मार्ग प्रशस्त किया, हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा थी। विद्यमान परिस्थितियों में भारत के पास इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं रह गया था। हमारे लिये यह आवश्यक हो गया था कि देश के परमाणु विकल्प को, जो सदियों से विकसित था, सुरक्षित, स्वैच्छिक, स्वआरोपित नियंत्रण द्वारा हास होने की अनुमति न दी जाय। 27 मई, 1998 को भारतीय संसद में दिये गये अपने वक्तव्य में भारतीय प्रधानमंत्री ने कहा था कि श्हमारा इरादा इन हथियारों का प्रयोग आक्रमण के लिये अथवा किसी देष के खिलाफ भय उत्पन्न करने के लिये करने का नहीं है। ये हथियार आत्मरक्षाश के लिये है ताकि यह सुनिष्चित किया जा सके कि भारत को कोई परमाणु खतरा नहीं है अथवा भारत पर कोई बल प्रयोग नहीं कर सकता।

हमारा इरादा शस्त्रों की दौड़ में शामिल होना नहीं है। भारत द्वारा किये गये परमाणु परीक्षणों पर विश्वस्तर पर व्यापक प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने भी भारत के परमाणु परीक्षण की आलोचना की थी इन आलोचनाओं के परिप्रेक्ष्य में यह कहा गया था कि भारत के परमाणु शस्त्र निर्माण के प्रयत्नों का मुख्य उद्देश्य सामरिक दृष्टि से एक ऐसा सुरक्षात्मक कवच तैयार करना था जो अनिश्चितताओं से भरे अराजक विश्व में चीन से बचाव कर सके। चीनी सामरिक नीति का उद्देश्य भारत को सामरिक दृष्टि से घेरना रहा है, जिससे दक्षिण एशियाई क्षेत्र में भारतीय प्रभाव को सीमित किया जा सके। अपने इन्हीं उद्देश्यों के अन्तर्गत चीन पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, म्यांमार एवं श्रीलंका को सैनिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करता रहा है। चीन ने पाकिस्तान को विभिन्न प्रकार के अत्याधुनिक टैंक, भारी तोपें, विमानभेदी तोपें, टैंक प्रतिरोधी प्रक्षेपास्त्र एवं अन्य युद्धक सामग्री प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त चीन ने एम–9, एम–11 प्रक्षेपास्त्र के रूप में परमाणु तकनीकि पाकिस्तान को दी है। चीन अपने परमाणु कार्यक्रम को निरंतर अत्याधुनिक बनाने के लिये प्रयत्नशील है। भारत का परमाणु कार्यक्रम मुख्यतः चीन को लक्षित है। अतः चीन की विस्तारवादी नीतियों के प्रतिरोध एवं भारतीय सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिये अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है।

1998 के परमाणु परीक्षणों के पश्चात् भारत ने 2003 में अपने परमाणु नीति की घोषणा की थी। इसमें कहा गया था कि

1. भारत की परमाणु नीति का मूल सिद्धान्त, पहले उपयोग नहीं (No First ues) है। इस नीति के अनुसार भारत किसी देश पर तब तक आक्रमण नहीं करेगा जब तक कि शत्रु देश भारत पर आक्रमण नहीं करता।
2. भारत अपनी परमाणु नीति को इतना सक्षम रखेगा कि दुश्मन के अंदर भय बना रहेगा।
3. यदि किसी देश ने भारत पर आक्रमण किया तो उसका प्रतिरोध इतना भयानक होगा कि दुश्मन को अपूर्णीय क्षति हो और जल्दी इस हमले से उबर न सके।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

4. दुश्मन के विरुद्ध परमाणु हमला करने का अधिकार केवल जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों को अर्थात् देश के राजनीतिक नेतृत्व को होगा। यद्यपि परमाणु कमांड अथारिटी का सहयोग आवश्यक होगा।[8]
5. जिन देशों के पास परमाणु हथियार नहीं है, उसके विरुद्ध परमाणु हथियारों का इस्तेमाल नहीं किया जायेगा।
6. यदि भारत के विरुद्ध या भारतीय सुरक्षा बलों के विरुद्ध कोई रसायनिक या जैविक हमला होता है, तो भारत जबाव में परमाणु हमले का विकल्प खुला रहेगा।
7. परमाणु और प्रक्षेपास्त्र सम्बन्धी सामग्री तथा प्रौद्योगिकी के निर्यात पर कड़ा प्रतिबंध जारी रहेगा तथा परमाणु परीक्षणों पर रोक जारी रहेगी।
8. भारत परमाणु मुक्त विश्व बनाने की वैश्विक पहल का समर्थन करता रहेगा और भेदभाव मुक्त परमाणु निशस्त्रीकरण के विचार को आगे बढ़ायेगा।

चीन ने परमाणु परीक्षण के पश्चात् विश्व में सर्वप्रथम श्नो फर्स्ट यूजश की नीति की घोषणा की थी। इसके बाद भारत ने 2003 में इसी प्रकार के नीति की घोषणा की। भारत और चीन के अतिरिक्त अन्य किसी परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र ने इस नीति को नहीं अपनाया। यद्यपि रूस और अमेरिका सुरक्षा के लिये इसके उपयोग की बात करते रहे हैं। इस नीति का विरोध करते हुये यह तर्क दिया जाता है कि इससे पारंपरिक युद्ध एवं हथियारों की दौंड में वृद्धि होगी। साथ ही ऐसा देश जिसकी नीति श्नो फर्स्ट यूजश की नहीं है, हमला करता है तो इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि अन्य देश हमले का जबाव देने की स्थिति में हों। अतः इस नीति को व्यावहारिक नहीं माना जा सकता। वहीं इस नीति के पक्षधरों का मानना है कि श्फर्स्ट यूजश की नीति परमाणु शस्त्रों के दौड़ को तेज कर देती है तथा विभिन्न देशों के बीच अविश्वास में वृद्धि कर सकती है। साथ ही फर्स्ट यूज की नीति ऐसे देशों के लिये कारगर नहीं हो सकती जो फर्स्ट स्टाइक में सक्षम न हों। इसके अतिरिक्त फर्स्ट यूज की नीति परमाणु हथियारों के साथ–साथ अन्य प्रकार की क्षमताओं के निर्माण में भी खर्च बढ़ायेगी।

भारत ने 2003 की श्नो फर्स्ट यूज की नीति को न केवल स्वीकार किया बल्कि विभिन्न मौकों पर इसका पालन भी किया। परमाणु परीक्षणों के पश्चात् कारगिल युद्ध में यह संभावना व्यक्त की गयी थी कि यह युद्ध परमाणु संघर्ष में परिवर्तित हो सकता है। परन्तु भारत ने संयम दिखाते हुये पारम्परिक तरीके से ही युद्ध में विजय प्राप्त की। मौजूदा वक्त में परमाणु शस्त्रों के सम्बन्ध में भारत की छवि एक जिम्मेदार राष्ट्र की बनी है तथा एनटीपी पर हस्ताक्षर नहीं करने के बाद भी भारत डज्ब्त (डपेपसम ज्मबीदवसवहल ब्वदजतवस त्मेहपउम) वासेनर अरेंजमेंट तथा आस्ट्रेलिया समूह का हिस्सा बन चुका है। इसके अतिरिक्त भारत छैळ (छनबसमवत नचचसपमत ळतवनच) की सदस्यता के लिये प्रयास कर रहा है। छैळ समूह की सदस्यता केवल उन्हीं राष्ट्रों को मिल सकती है जो छच्ज् के हस्ताक्षर कर्ता हैं। इसी आधार पर भारत की सदस्यता में चीन बाधा बन रहा है। यद्यपि अन्य देशों के समर्थन से सदस्यता के लिये भारत का पक्ष काफी मजबूत है। यह समूह विश्व में यूरेनियम की आपूर्ति को नियंत्रित करता है। छैळ ने भारत को यूरेनियम आयात करने की छूट प्रदान की है ताकि भारत अपने असैन्य उपयोग के लिये यूरेनियम की प्राप्ति सुनिश्चित कर सके।[9]

वर्ष 2014 में आम चुनाव में भारतीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारत की परमाणु नीति चर्चा में रही थी, परन्तु इसमें किसी प्रकार का बदलाव नहीं किया गया। यदि भारत इस नीति में परिवर्तन करता है तो अन्य वैश्विक समीकरणों को यदि कुछ समय के लिये छोड़ भी दिया जाय तो घरेलू स्तर पर आने वाली समस्यायें चुनौती उत्पन्न कर सकती हैं। अमेरिका जैसे देश श्फर्स्ट यूजश की नीति का अनुसरण करते हैं, लेकिन अमेरिका के पास ऐसे हथियार उपलब्ध हैं जिससे कुशलतापूर्वक स्ट्राइक की जा सकती है। परन्तु भारत को इस प्रकार का उपकरण एवं बुनियादी ढांचे का निर्माण करना पेश है। रक्षा क्षेत्र से सम्बन्धित प्रौद्योगिकी अत्यन्त महंगी होती है और कोई भी देश ऐसी तकनीकी किसी को देना नहीं चाहता। ऐसी स्थिति में भारत की बजटीय क्षमता को देखते हुये इस प्रकार के बुनियादी ढाँचे एवं अत्याधुनिक उपकरणों का निर्माण आर्थिक रूप से व्यावहारिक नहीं होगा। यदि भारत अपनी परमाणु नीति में परिवर्तन करता है तो चीन के लिये यह स्थिति एक अवसर के समान होगी जिसका उपयोग वह भारत की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता का विरोध करने के लिये कर सकता है। भारत की बैलिस्टिक मिसाइल क्षमता वाली परमाणु पनडुब्बी आई०एन०एस० अरिहंत के अपना पहला अभियान पूर्ण करने के उपलक्ष्य में भारतीय प्रधानमंत्री ने अपनी परमाणु प्रतिबद्धता को दोहराते हुये कहा था कि श्नो फर्स्ट यूजश भारत की परमाणु नीति का अखण्ड भाग है। वस्तुतः भारत की परमाणु नीति का निर्माण कई वर्षों के विश्लेषण एवं मूल्यांकन के पष्चात् ही किया गया था। ऐसी स्थिति में सरकार यदि इस नीति में कोई परिवर्तन करना चाहती है तो नीति में परिवर्तन के पूर्व 1. इसके प्रभावों एवं परिणामों का गहन मूल्यांकन आवश्यक है। भारत के पड़ोस में पाकिस्तान निरंतर अपनी परमाणु क्षमता में वृद्धि कर रहा है तथा वर्तमान में उसके पास भारत से अधिक परमाणु शस्त्र विद्यमान है। वहीं दूसरी 2. तरफ भारत का दूसरा पड़ोसी चीन परमाणु शक्ति सम्पन्न है। भारत और पाकिस्तान आपसी सम्बन्धों के संदर्भ में पहले से ही कड़वाहट के दौर से गुजर रहे हैं तथा चीन के 3. साथ भारत के सम्बन्ध भी अस्थिर रहे हैं। इसके साथ ही इन देशों के साथ भारत का युद्ध का इतिहास भी रहा है। 4. ऐसी स्थिति में भारत की परमाणु नीति में परिवर्तन युद्ध एवं सैनिक संघर्ष के समय पहले से ही विद्यमान विश्वास की कमी को और बढ़ायेगा, साथ ही यह भी सम्भव है कि सैनिक संघर्ष परमाणु युद्ध में परिवर्तित हो जाय। सभी सम्बद्ध पक्ष ऐसी स्थिति से बचना चाहेगें क्योंकि कोई भी राष्ट्र युद्ध में जाना नहीं चाहेगा। इस रूप में भारत की विद्यमान परमाणु नीति में परिवर्तन किसी भी रूप में भारतीय राष्ट्रीय हितों के अनुरूप नहीं होगी। भारत सरकार ने भी इस सम्बन्ध में अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

भारत के परमाणु उर्जा कार्यक्रम के सम्बन्ध में विश्व परमाणु उद्योग स्थिति रिपोर्ट (World Nuclear Industry Status Report&201) से ज्ञात होता है कि स्थापित किये गये परमाणु रिएक्टरों की संख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में तीसरा स्थान है। भारत अपने परमाणु उर्जा कार्यक्रम के अन्तर्गत 2021 तक 14.6 गीगावाट बिजली का उत्पादन करेगा, जबकि वर्ष 2032 तक बिजली उत्पादन की यह क्षमता 63 गीगावाट हो जायेगी। फिलहाल भारत में 21 परमाणु रिएक्टर सक्रिय हैं जिनसे लगभग 7 हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त 11 अन्य रिएक्टरों पर विभिन्न चरणों में काम चल रहा है। इनके सक्रिय होने के बाद 8 हजार मेगावाट अतिरिक्त बिजली का उत्पादन होने लगेगा। भारत अपने परमाणु हथियार कार्यक्रम के कारण परमाणु अप्रसार संधि में सम्मिलित नहीं है। अतः 34 वर्षों तक इसके परमाणु संयंत्रों पदार्थों के व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, जिससे वह वर्ष 2009 तक अपनी सिविल परमाणु उर्जा का विकास नहीं कर सका। पूर्व के व्यापार प्रतिबंधों एवं स्वदेशी यूरेनियम के अभाव में भारत थोरियम भंडारों से लाभ प्राप्त करने के लिये परमाणु ईंधन चक्र का विकास कर रहा है। भारत का प्राथमिक उर्जा उपभोग वर्ष 1990 से वर्ष 2011 के मध्य दो गुणा हो गया था।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. Verma, S.P.: India-Pakistan-China - A
2. Study of Regional Impedances, South Asian Studies, Vol. -6, No.-2, July-1971, P. 13-14.
3. Neharu, J.L.: Indian Foreign, Policy 2nd edition, Intonation and Publication Divi sion, New Delhi, 1977, p. 103.
4. Asian Recorder, March 3-17, 1967, p. 7210.
5. Singh, Surjeet: India's Search for power, Sage Publication, New Delhi, 1984, p.
6. [11:32 am, 20/4/2025] Murti Bhandaram: 229.
7. Sharma, C.P.: Power and Peace, Kitab Ghar, Publications, New Delhi, 2000, P. 73-74.
8. Sharma, C.P.: Power and Peace, Kitab Ghar, Publications, New Delhi, 2000, P. 72.
9. The Hindu and Times of India, 16 May, 1998 Datta, V.P.: India's Foreign Policy in a changing world, Vikas Publishing House, New Delhi, (Second Reprint), 2003, p. 365.
10. Sharma, C.P.: Power and Peace, Kitab Ghar, Publications, https://
11. www.jagaranjosh.com, New Delhi, 2000.
12. Hemant Singh. भारत की परमाणु नीति क्या है? जागरण जोश, अप्रैल, 24, 2018.
13. भारत का नाभिकीय कमांड प्राधिकरण (छै।) भारत के परमाणु हथियारों के कमान, नियंत्रण एवं संचालन से सम्बन्धित निर्णयों के लिये निर्मित प्राधिकरण है। एन०एस०ए० के शीर्ष पर राजनीति परिषद है। जिसके प्रमुख प्रधानमंत्री होते हैं और इसमें रक्षा, गृह एवं विदेशमंत्री के साथ ही सुरक्षा पर बड़ी मंत्रिमंडलीय समिति के सभी मंत्रीगण सदस्य के रूप में सम्मिलित होते हैं। राजनीति परिषद के चीने कार्यकारी परिषद होती है जिसके प्रमुख राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (छै।) होते हैं और इसमें अन्य लोगों के अतिरिक्त सेना के तीनों अंगो के प्रमुख, भारत के स्ट्रेटेजिक फोर्सेज कमांड के कमांडर–इन–चीफ और एक तीन सितारा अधिकारी सम्मिलित है। dhyeyaias.in/no first use policy, time to rethink.
14. Dhyeyaias.in/current, भारत की परमाणु नीति
15. Drishitiias.com/hindi/ परमाणु नीति
16. Drishitiias.com/hindi/ परमाणु नीति

*****